में षडज-पंचम और षडज-मध्यम भाव कहा गया है।

षडज ग्रामिक स्वर—

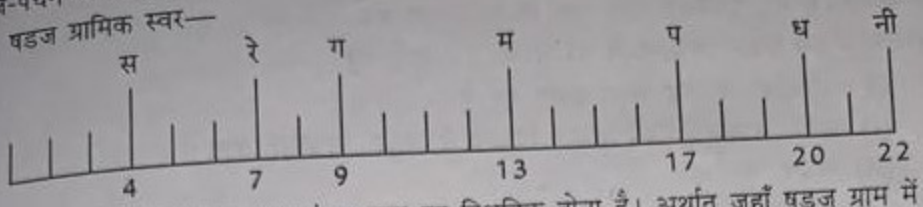

मध्यम ग्राम का मुख्य लक्षण पंचम स्वर का त्रिश्रुतिक होना है। अर्थात् जहाँ षडज ग्राम में पंचम चार श्रुतियों का है, वहीं मध्यम ग्राम का पंचम त्रिश्रुतिक रहता है। मध्यम ग्राम की स्वरावलि मध्यम स्वर से आरम्भ की जाती है। जैसे—म, प, ध, नी, स, रे, ग। मध्यम ग्राम में मध्यम स्वर मुख्य है। अतः मध्यम स्वर के धैवत और निषाद ये दो स्वर सम्वादी होते हैं। मध्यम ग्राम में प्रत्येक स्वर के लिए व्यवस्था 4+3+4+2+4+3+2=22 की है।

मध्यम ग्रामिक स्वर व श्रुति—

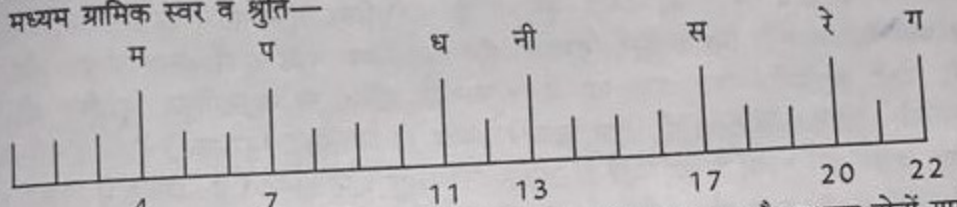

प्राचीन संगीत में जब मूर्च्छना-जाति गायन प्रचार में था, तब षडज ग्राम और मध्यम दोनों ग्रामों का प्रयोग किया जाता था किन्तु जब राग-गायन प्रचार में आया तो मध्यम ग्राम का लोप हो गया और केवल षडज ग्राम से थाट-राग की उत्पत्ति का क्रम बना। षडजग्राम ही आधुनिक संगीत का विलावल और पाश्चात्य संगीत के major scale के रूप में सामने आया।

मूर्च्छना व्याख्या व प्रकार—"मूर्च्छना" का सर्वाधिक स्पष्टीकरण भरत के नाट्यशास्त्र में प्राप्त होता है। अतएव उनके मतानुसार 'मूर्च्छना' शब्द की उत्पत्ति में मूर्च्छ धातु से होती है जिसका अभिप्राय चमकना या उभार से है। अर्थात् स्वरों के उभार का नाम 'मूर्च्छना' है। लेकिन 'मूर्च्छना' का स्वरूप वस्तुतः "क्रमयुक्ता स्वरा सप्त मूर्च्छना इत्यभि संज्ञिताः' अर्थात् सातस्वरों का क्रमानुसार प्रयोग मूर्छना कहलाता है। आधुनिक मेल या थाट का स्वरूप प्राचीन 'मूर्च्छना' की तरह है।

(1) मतंगमुनि के अनुसार 'मूर्च्छना' शब्द मूर्च्छ धातु से बना है जिसका अभिप्राय कुछ बनाना। अतएव आरोह-अवरोह से प्राप्त क्रमबद्ध सात स्वर 'मूर्च्छना' कहलाता है।

(2) आचार्य अभिनवगुप्त के अनुसार क्रमानुसार सात स्वरों का आरोह-अवरोह करने की क्रिया 'मूर्च्छना' कहलाती है।

(3) डॉ0 मुकुन्द लाट के अनुसार ग्राम के प्रत्येक स्वर को आरम्भिक स्वर मानते हुए सात स्वरों का आरोह-अवरोह 'मूर्च्छना' कहलाता है।

उपरोक्त विद्वानों के मतानुसार सात स्वरों का क्रमानुसार आरोह-अवरोह 'मूर्च्छना' है जिससे जातियाँ का निर्माण किया जाता है। इस प्रकार 'मूर्च्छना' में निम्न बातों का होना आवश्यक है—

(अ) सात स्वरों का प्रयोग

(ब) सात स्वरों का क्रमानुसार होना

(स) ग्राम या सप्तक के प्रत्येक स्वर को आधार या आरम्भिक स्वर मानते हुए आरोह-अवरोह करना।